लोक की पृष्ठ भूमि

गुण और पर्याय के समूह को अथवा जो उत्पाद, व्यय और ध्रोव्य से युक्त है उसे द्रव्य कहते है। द्रव्य छः है –जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल। जितने क्षेत्र में ये छः द्रव्य पाये जाते हैं वह लोक कहलाता है। लोक अकृत्रिम, अनन्त व अनादि–निर्जरा है। इसे किसी ने बनाया नहीं है, न इसका आदि है और न इसका अन्त है अर्थात् यह कभी नष्ट नहीं होगा और सदा ऐसा ही रहेगा।

लोक/लोकाकाश के बाहर चारों ओर जो आकाश द्रव्य है उसे अलोक/अलोकाकाश कहते हैं। अलोक/अलोकाकाश में मात्र एक आकाश द्रव्य होता है, अन्य नहीं।

लोक का वर्णन

7 पुरुष एक के पीछे एक–एक खड़े होकर पैर पसारे हुए और कमर पर हाथ रखे हुए खड़े हों, उन जैसा आकर इस लोक का है । केवल उनका मुख जितना आकार हटा दिया जाए तो ...

– इस लोक का कोई करने वाला नहीं है, और ना ही कोई हरने वाला है इसे, ये लोक अनादि काल से है, ये लोक अनंत काल तक रहेगा ।

– अनंतानंत जीव कर्मों के वश में आकर अनंत काल से इस लोक में भटक रहे हैं ।

– लोक की रचना को जानने के लिए, उससे सम्बंधित कुछ अन्य शब्दों के अर्थ पहले जानने होंगे, जैसे :

– योजन

– राजू

– वातवलय इत्यादि

क्यूंकि ये शब्द बार–बार उपयोग में आयेंगे ।

– ''योजन'' और ''राजू'' को समझेंगे, ये दोनों ही क्षेत्र–सम्बन्धी मापक हैं :–

8 जौ के दाने = 1 अंगुल

12 अंगुल = 1 बिलांद

2 बिलांद = 1 हाथ

4 हाथ = 1 धनुष

2000 धनुष = 1 कोस या 2 मील

4 कोस (8 मील) = 1 लघु–योजन – जीवों के शरीर, मंदिर, नगर इत्यादि को मापने हेतु

2000 कोस (4000 मील) = 1 महायोजन – पर्वत, द्वीप, समुद्र इत्यादि को मापने हेतु

और

ऐसे असंख्यात महा–योजन = 1 राजू ।

इस 1 राजू को णमोकार–ग्रन्थ में आचार्य–रत्न श्री देशभूषण जी महाराज ने बहुत स्पष्टता से समझाया है :

मान लीजिये कोई देव पहले समय में एक लाख योजन, दूसरे समय में २ लाख योजन गमन करे, और इसी प्रकार प्रति–समय दुगना–दुगना गमन करता हुआ अढ़ाई सागर याने 25 कोड़ा–कोड़ी उद्धार पल्य तक लगातार बिना रुके चलता रहे, तब वह आधा राजू चल पायेगा, इसे दोगुणा करने से जो क्षेत्र होगा, वही ''एक राजू'' का प्रमाण है और यही हमारे मध्य लोक की चौड़ाई है ।

हमारी सोच से भी परे है इस लोक का विस्तार....

जो समस्त द्रव्यों को अवकाश अर्थात् स्थान देता है, उसे आकाश द्रव्य कहते है। आकाश द्रव्य के दो भेद है :–

1. लोक / लोकाकाश
2. अलोक / अलोकाकाश

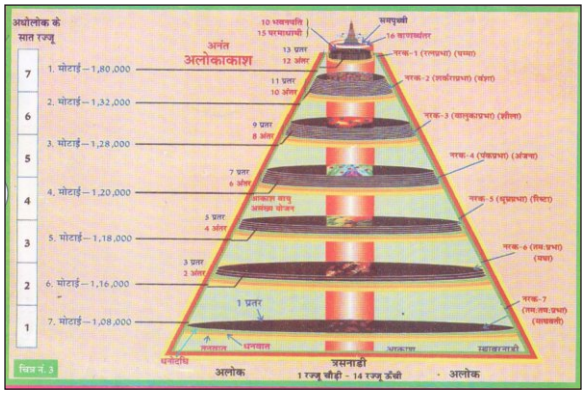

लोक का आकार :

ऊंचाई :– 14 राजू है

मोटाई :– हर जगह से 7 राजू है

चौड़ाई :– – नीचे मूल में 7 राजू,

फिर ऊपर को क्रमशः घटता–घटता 7 राजू की ऊंचाई पर मध्य में 1 राजू चौड़ा और फिर अनुक्रम से बढ़ता–बढ़ता साढ़े–तीन राजू की ऊंचाई पर याने मूल से (नीचे से) कुल साढ़े दस राजू की ऊंचाई पर ''ब्रह्मलोक''(पांचवा स्वर्ग) के पास 5 राजू चौड़ा है और फिर पांचवें स्वर्ग से क्रम से घटता–घटता 14 राजू की ऊंचाई पर याने अंत में शीर्ष पर 1 राजू चौड़ा है ।

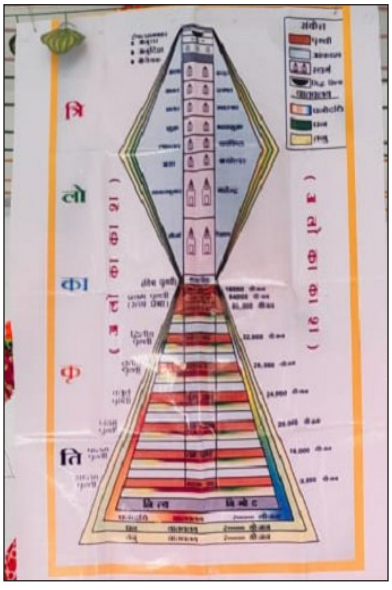

तीन लोक का आयतन (volume) 343 घन राजू है।

वातवलय

– जैसे पेड़ की छाल जैसे पूरे पेड़ को घेरे रहती है, या जैसे हमारे शरीर के ऊपर सर्वांग चाम (खाल) होती है ठीक वैसे ही सम्पूर्ण लोक को चारों तरफ से 3 वातवलयों (वातावरणों) ने घेरा हुआ है !

– ये एक प्रकार की वायु / हवाएं जैसी हैं ।

1. घनोदधि वातवलय – वाष्प का घना वातावरण, गौमूत्र के समान रंग वाला
2. घन वातवलय – घनी हवा का वातावरण, मूंग (अन्न वाली) के समान रंग वाला
3. तनु वातवलय – हलकी / पतली हवा का वातावरण, ये अनेक रंगों को धारण किये हुए है।

इन तीनो में सबसे पहले घनोदधि वातवलय लोक का आधार है उसे घेरे हुए घन वातवलय

और आगे उसे घेरे हुए तनु वातवलय हैं।

ये लोक इन्ही तीनो वातवलयों के आधार पर स्थित है ।

और ये तीनो वातवलय आकाश द्रव्य के आधार पर स्थित हैं ...

आकाश द्रव्य स्व–प्रतिष्ठित है उसे अन्य के आश्रय की जरुरत नहीं ।

लोक के नीचे इनकी मोटाई 20–20 हजार योजन है और ऊपर कम है। मध्य लोक के पार्श्व में इनकी मोटाई क्रमशः 5, 4, 3 योजन है और उर्ध्वलोक के ऊपर इनकी मोटाई क्रमशः 4000, 2000 और 1575 धनुष है। आठों पृथ्वियों के नीचे इन वातवलयों की मोटाई 20–20 हजार योजन है।

– इस प्रकार अनन्तानन्त अलोकाकाश के बीचो–बीच ''लोक'' कुछ इस प्रकार स्थित है जैसे किसी कमरे में छींका बिना रस्सी के लटक रहा हो । लोक के तीन भाग :

जैन भूगोल के अनुसार लोक के तीन भाग क्रमशः अधोलोक, मध्यलोक और उर्ध्वलोक है।

1. अधोलोक

– लोक का निचला भाग अधोलोक कहलाता है। (पाताल लोक कहते हैं)

इसकी :–

ऊंचाई – 7 राजू

मोटाई – 7 राजू और

चौड़ाई –नीचे 7 और ऊपर 1 राजू है ।

– मध्य लोक में मेरु के नीचे क्रम से एक के नीचे दूसरी इस प्रकार 7 भूमियां हैं ... जिन्हे ''नारकियों का निवास स्थान'' होने के कारण नरक कहते हैं ।

– इन सात पृथ्वियों / नरकों के बीच में आपस में असंख्य योजनों का अंतर है ।

1. – रत्नप्रभा (धम्मा) – 180000 योजन मोटा

2. – शर्कराप्रभा (वंशा) – 132000 योजन

3 – बालुकाप्रभा (मेघा) – 128000 योजन

4 – पंकप्रभा (अंजना) – 124000 योजन

5 – धूमप्रभा (अरिष्टा) – 120000 योजन

6 – तमः प्रभा (मघवी) – 116000 योजन

7 – महातमः प्रभा (माघवी) – 108000 योजन

पहली ''रत्नप्रभा (धम्मा)'' पृथ्वी है, इसके 3 भाग हैं :–

1. खर भाग – 16,000 योजन मोटा है, इसमें 9 प्रकार के भवनवासी देव और 7 प्रकार के व्यंतर देव रहते हैं।

– पंक भाग – 84,000 योजन मोटा है, इसमें बाकी के असुरकुमार (भवनवासी देव) और राक्षस (व्यंतर देव) रहते हैं।

3– अब्बहुल भाग – 80,000 योजन मोटा, अब्बहुल भाग है, इसमें प्रथम नरक है। इसमें नारकी रहते हैं।

– इस प्रकार पहली पृथ्वी की मोटाई 1,80,000 योजन होती है।

फिर बीच में तीन वातवलय हैं, उसके नीचे दूसरी शर्कराप्रभा और इसी प्रकार बाकी के छह नरक हैं।

– पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा और पांचवें नरक का ऊपरी भाग अत्यंत गर्म है।

– पांचवें नरक का नीचे का, छठा और सातवां नरक भयंकर ठन्डे हैं।

इन सभी नरकों में पहले से सांतवे नरक तक जाते हुए वेदना, अवगाहना, आयु सब बढ़ते चलते हैं, और इसके अंत में निगोद है, निगोद के दुःख की तो चर्चा ही क्या ?

निगोद :

कलकल–पृथ्वी/निगोद :– सातवें नरक ''महातमः प्रभा'' के बाद 1 राजू ऊँचा खाली क्षेत्र है। जिसे कलकल पृथ्वी कहते हैं। इसमें पञ्च–स्थावर और निगोदिया जीव रहते हैं ।

जो अनन्त जीवों को एक निवास दे उसे निगोद कहते है। वहां एक ही साधारण शरीर में अनन्त जीव निवास करते हैं। सातवी पृथ्वी के नीचे 1 राजू उंचा खाली (पृथ्वी रहित) क्षेंत्र है जिसे कल–कल पृथ्वी कहते हैं जिसमें पंच स्थावर और निगोदिया जीव रहते है। इन जीवों की संख्या अक्षय–अनन्त है। आगम के अनुसार 6 माह 8 समय में 6708 जीव मोक्ष जाते है और इतने ही जीव निगोद से निकलते है। फिर भी निगोद में जीवों की संख्या अक्षय–अनन्त ही रहती है। निगोदिया जीवों का शरीर अत्यन्त सूक्ष्म होता है और यह जीव 1 श्वास में 18 बार जन्म–मरण करते हुये दुःख भोगता है।

निगोद में स्थित जीव दो प्रकार के होते हैं :–

(1) नित्य निगोद – ऐसे जीव जो सदा से निगोद में ही है तथा जिन्होंने कभी त्रस पर्याय को प्राप्त नहीं किया है।

(2) इतर निगोद – जो जीव निगोद से निकलकर त्रस–स्थावर आदि पर्यायों में भ्रमण कर पापेदयवश पुनः निगोद में ही उत्पन्न होते हैं, ये इतर निगोद जीव है। इन्हें चतुर्गति निगोद के जीव भी कहते है।

अद्योलोक में 25 भवन देवता निवास करते हैं जिसका नमूने रुप में निम्न चित्र है।

2. मध्य लोक (तिरच्छा लोक)

यह लोक के मध्य में स्थित है। इसकी चौड़ाई 1 राजू, लम्बाई 7 राजू और ऊँचाई 1 लाख 40 योजन है। इसके बीचों–बीच थाली के आकार का जम्बू द्वीप है। इसके बाद चूड़ी के आकार के असंख्य समुद्र व द्वीप है जो एक दूसरे को घेरे हुये है और क्रमशः दूने–दूने विस्तार वाले हैं। जम्बू द्वीप के चारों ओर लवण समुद्र, फिर धातकीखण्ड द्वीप फिर कालोद समुद्र फिर पुष्करवर द्वीप के बीच में मानुषोत्तर पर्वत होने से इस द्वीप के दो भाग हो गये है। मानुषोत्तर पर्वत के आगे मनुष्य (विद्याधर व ऋद्धिधारी भी) नहीं जा सकते हैं। आठवां द्वीप नन्दीश्वर द्वीप है। अन्तिम द्वीप स्वयं–भूरमण द्वीप है और अन्तिम समुद्र स्वयं भूरमण समुद्र है।

मध्य लोक की पृथ्वी 1000 योजन मोटी है। इसे चित्रा पृथ्वी भी कहते है क्योंकि यह चित्र–विचित्र धातु, पाषाण, मणियों आदि से युक्त है। इस मध्य लोक में तिर्यञ्च जीव सर्वत्र पाए जाते हैं, अतः इसे तिर्यक् लोक भी कहते है।

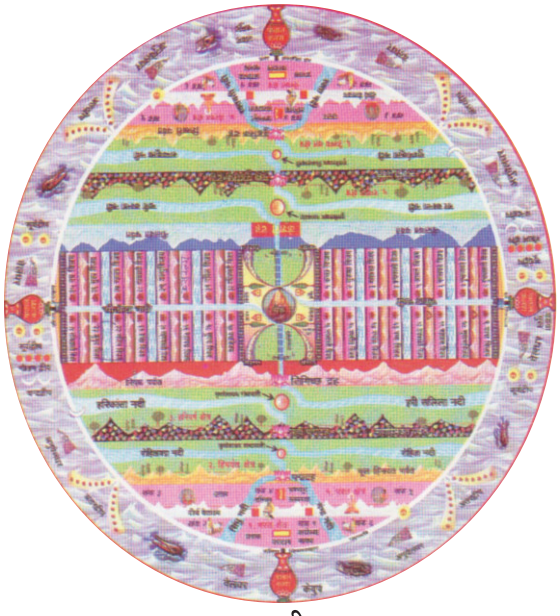

जम्बूद्वीप

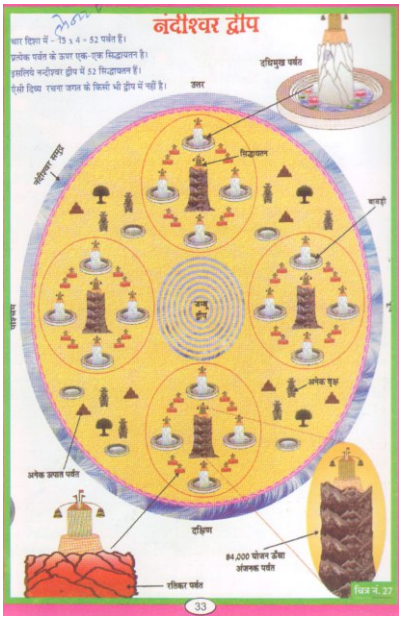

अढाई द्वीप :

जम्बू द्वीप, लवण समुद्र, धातकीखण्ड द्वीप, कलोद समुद्र और पुष्करार्ध द्वीप का मानुषोत्तर पर्वत तक का आधा भाग अढाई द्वीप क्षेत्र है और इसका विस्तार 45 लाख योजन है। मानुषोत्तर पर्वत तक ही मनुष्य जा सकता है। इसके आगे ऋद्धिधारी मनुष्य या विद्याधर भी नहीं जा सकते है। अतः यह ढाई द्वीप तक का क्षेत्र मनुष्य लोक कहलाता है। अढाई द्वीप के आगे मनुष्यों का निवास नहीं है – शेष द्वीपों में तिर्यञ्च या भूत–प्रेंत आदि व्यन्तर देव निवास करते है। धातकीखण्ड द्वीप में 2 इष्वाकार पर्वत तथा पुष्करार्ध द्वीप में भी दो इष्वाकार पर्वत होने से इन दोनों द्वीपों के 2–2 भाग हो गये है और प्रत्येक भाग में जम्बू द्वीप के समान रचना है । इस प्रकार जम्बू द्वीप में जितने पर्वत, नदियां, क्षेत्र, तालाब आदि है उनसे दुगुने धातकीखण्ड द्वीप में व दुगुने ही पुष्करार्द्ध द्वीप में है। जम्बू द्वीप, लवण समुद्र, धातकी खण्ड द्वीप, कालोद समुद्र और पुष्करार्द्ध द्वीप में क्रमशः 24, 12, 42 एवं 72 चन्द्रमा व सूर्य है। अढ़ाई द्वीप में 132 चन्द्रमा और 132 सूर्य है।

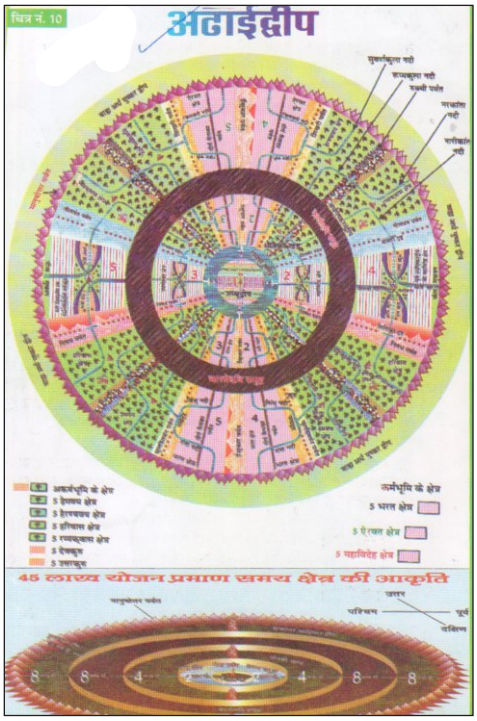

मध्य लोक के कुछ द्वीप, उनके समुद्र और उनके विस्तार :-

क्रम	द्वीप/समुद्र	विस्तार
1	जम्बूद्वीप	एक लाख योजन
2	लवणसमुद्र	दो लाख योजन
3	घातकीखण्ड द्वीप	चार लाख योजन
4	कालोद समुद्र	आठ लाख योजन
5	पुष्करार्ध द्वीप	सोलह लाख योजन
6	पुष्करार्ध समुद्र	बत्तीस लाख योजन
7	वारुणीवर द्वीप	चौसठ लाख योजन
8	वारुणीवर समुद्र	एक सौ अठ्ठाईस लाख योजन

इस क्रम में ''आठवां'' द्वीप – नंदीश्वर द्वीप'' है।

तेरहवां द्वीप ''रूचिकवर द्वीप'' है, इस द्वीप तक ही अकृत्रिम चैताल्य है।

इस क्रम अनुसार 16 द्वीप–समुद्रों के आगे होने वाले असंख्यात द्वीप–समुद्रों के नाम नहीं लिखे जा सकते हैं अतः अन्त के भी सोलह द्वीप और सोलह समुद्रों के नाम शास्त्र में बताये गए हैं जो निम्नानुसार है :–

स्वयंभूरमण समुद्र स्वयंभूरमण द्वीप	अहीन्द्रवर समुद्र अहीन्द्रवर द्वीप
देववर समुद्र देववर द्वीप	यक्षवर समुद्र यक्षवर द्वीप
भूतवर समुद्र भूतवर द्वीप	नागवर समुद्र नागवर द्वीप
वैडूर्य समुद्र वैडूर्य द्वीप	वज्रवर समुद्र वज्रवर द्वीप
कांचन समुद्र कांचन द्वीप	रूप्यवर समुद्र रूप्यवर द्वीप
हिंगुल समुद्र हिंगुल द्वीप	अंजनवर समुद्र अंजनवर द्वीप
श्याम समुद्र श्याम द्वीप	सिंदूर समुद्र सिंदूर द्वीप
हरितालसमुद्र हरिताल द्वीप	मनःशिल समुद्र मनःशिल द्वीप

ये सोलह समुद्र और सोलह द्वीप हैं। अन्त में स्वयम्भूरमण द्वीप है, पुनः उसे वेष्टित कर सबसे अन्त में स्वयंभूरमण समुद्र है। इसलिए सर्वप्रथम तो द्वीप है और अंत में समुद्र है ऐसा समझना चाहिए।

इसी प्रकार असंख्यात द्वीप और समुद्र मध्यलोक में है। आगे के द्वीप का जो नाम है, वही उसके समुद्र का नाम है। इन द्वीपों और समुद्रों का विस्तार आगे–आगे दुगुना होता चला गया है।

अंतिम द्वीप – स्वयंभूरमणद्वीप है।

पहला द्वीप जम्बू द्वीप है जो

1. मध्य लोक के बीचों–बीच 1,00,000 योजन विस्तार वाला है।
2. जम्बू –द्वीप थाली के आकार वाला है।

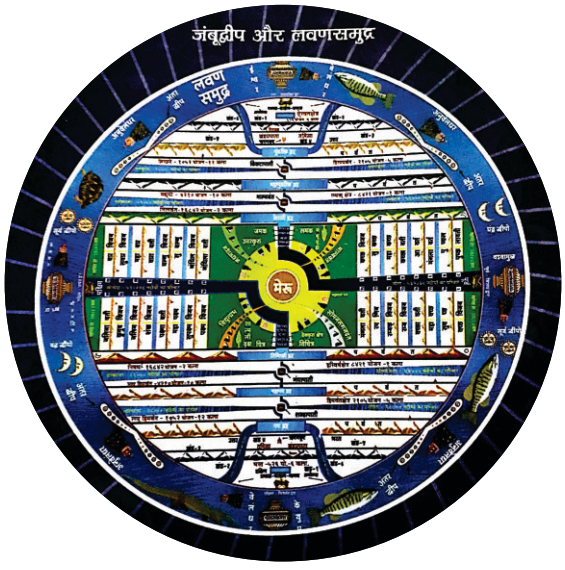

इसके बाद इसे चारों तरफ से घेरे हुए समुद्र लवण समुद्र है, जो कि इस जम्बू द्वीप से दूगुने विस्तार वाला है।

– लवण समुद्र चुड़ी के आकार वाला है।

– जम्बू द्वीप के उत्तर–कुरू भोगभूमि में अनादिनिधन जम्बू जामुन का वृक्ष है, जिसके कारण ही इस द्वीप का नाम जम्बू द्वीप पड़ा।

– यह वृक्ष वनस्पति कायिक नहीं पृथ्वीकायिक है।

इन सभी द्वीपों में अतीत के तीर्थंकर, विद्यमान तीर्थंकर और भविष्य में भी तीर्थंकर होंगे जिनका विवरण निम्नानुसार है :–

जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में 24 तीर्थंकर निम्न प्रकार से है :

नं.	अतीत चौबीसी	वर्तमान चौबीसी	आगामी चौबीसी
1.	श्री केवलज्ञानी जी	श्री ऋषभदेवजी	श्री पद्मनाभजी
2.	श्री निर्वाणीजी	श्री अजितनाथजी	श्री सुरदेवजी
3.	श्री सागरजी	श्री संभवनाथ जी	श्री सुपार्श्वजी
4.	श्री महायशजी	श्री अभिनंदनस्वामी जी	श्री स्वयंप्रभजी
5.	श्री विमलजी	श्री सुमतिनाथ जी	श्री सर्वानुभूतिजी
6.	श्री सर्वानुभूतिजी	श्री पद्मप्रभुजी	श्री देवश्रुतजी
7.	श्री धरजी	श्री सुपार्श्वनाथजी	श्री उदयजी
8.	श्री श्रीदत्तजी	श्री चंद्रप्रभुजी	श्री पेढ़ालजी
9.	श्री दामोदरजी	श्री सुविधिनाथजी	श्री पोट्टीलजी
10.	श्री सुतेजाजी	श्री शीतलनाथजी	श्री शतकीर्तिजी
11.	श्री स्वामीनाथजी	श्री श्रेयांसनाथजी	श्री सुव्रतजी
12.	श्री मुनिसुव्रत जी	श्री वासुपूज्य जी	श्री अममजी
13.	श्री सुमतिजी	श्री विमलनाथजी	श्री निष्कषायजी
14.	श्री शिवगतिजी	श्री अनंनतनाथजी	श्री निष्पुलाकजी
15.	श्री अस्त्यागजी	श्री धर्मनाथजी	श्री निर्ममजी
16.	श्री नमीश्वरजी	श्री शांतिनाथजी	श्री चित्रगुप्तजी
17.	श्री अनिलजी	श्री कुंथुनाथजी	श्री समाधिजी
18.	श्री यशोधरजी	श्री अरनाथजी	श्री संवरजी
19.	श्री कृतार्थजी	श्री मल्लिनाथजी	श्री यशोधरजी
20.	श्री जिनेश्वरजी	श्री मुनिसुव्रत स्वामी जी	श्री विजयजी
21.	श्री शुद्धमतिजी	श्री नमिनाथजी	श्री मल्लिजी
22.	श्री शिवशंकरजी	श्री नेमिनाथजी	श्री देवजीनजी
23.	श्री श्यंदनजी	श्री पार्श्वनाथजी	श्री अनंतवीर्यजी
24.	श्री संप्रतिजी	श्री महावीर स्वामीजी	श्री भद्रकृतज

महाविदेह क्षेत्र

इस क्षेत्र में हमेशा 20 विरहमान विचरण करते है और भविष्य में भी विचरण करते रहेंगे। इन्हें जीवन्त तीर्थंकर माना जाता है, इनकी पूजा की जाती है । जिनके नाम निम्नानुसार है :–

1. श्री सिमंधर स्वामी जी
2. श्री युगमंदिर स्वामी जी
3. श्री बाहुस्वामी जी
4. श्री सुबाहु स्वामी जी
5. श्री सुजात स्वामी जी
6. श्री स्वयंप्रभ स्वामी जी
7. श्री ऋषभानन स्वामी जी
8. श्री अनंतवीर्य स्वामी जी
9. श्री सुरप्रभ स्वामी जी
10. श्री वज्रधर स्वामी जी
11. श्री विशालधर स्वामी जी
12. श्री चन्द्रानन स्वामी जी
13. श्री चन्द्रबाहु स्वामी जी
14. श्री भुजंग स्वामी जी
15. श्री ईश्वर स्वामी जी
16. श्री नेवमीश्वर स्वामी जी
17. श्री वीरसेन स्वामी जी
18. श्री महाभद्र स्वामी जी
19. श्री देवयश स्वामी जी
20. श्री अजितवीर्य स्वामी जी

इन सभी विरहमान का जन्म वर्तमान चौबीसी के 17 वें तीर्थंकर कुंथुनाथ भगवान के समय हुआ । वर्तमान चौबीसी के 20 वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत स्वामी के समय में दीक्षा कल्याणक हुआ। निर्वाण आगामी चौबीसी के 7 वें तीर्थंकर श्री उदय जी के समय में होगा। आने वाले सभी विरहमानों का जन्म व दीक्षा व निर्वाण एक ही समय में होगा।

जम्बू द्वीप के ऐरावत क्षेत्र में

नं.	अतीत चौबीसी	वर्तमान चौबीसी	आगामी चौबीसी
1.	श्री पंचरूपजी	श्री चंद्राननजी	श्री सिद्धार्थजी
2.	श्री जिनहरजती	श्री सुचंद्र(चंद्रनाथ)जी	श्री विमलजी
3.	श्री संपुटिकजी	श्री अग्निषेणजी	श्री विजयघोषजी
4.	श्री उज्जयंतिकजी	श्री नंदिषेणजी	श्री नंदिषेणजी
5.	श्री अधिष्ठायकजी	श्री ऋषिदत्तजी	श्री सुमंगलजी
6.	श्री अभिनंदनजी	श्री व्रतधरजी	श्री वज्रधरजी
7.	श्री रत्नेशजी	श्री सोमचंद्रजी	श्री निर्वाणजी
8.	श्री रामेश्वरजी	श्री चार्थसेनजी	श्री धर्मध्वजजी
9.	श्री अंगुष्टमजी	श्री शतायुषजी	श्री सिद्धसेनजी
10.	श्री विनाशकजी	श्री शिवसुतजी	श्री महसेनजी
11.	श्री सुविधानजी	श्री श्रेयांसजी	श्री वीरमित्रजी
12.	श्री सुविधानजी	स्वयंजलजी	श्री सत्यसेनजी
13.	श्री प्रदत्तजी	श्री सिंहसेनजी	श्री चंद्राविभुजी
14.	श्री कुमारजी	श्री उपशांतजी	श्री महेन्द्रजी
15.	श्री सर्वशैलजी	श्री गुप्तसेनजी	श्री स्वयंजलजी
16.	श्री प्रभंजनजी	श्री महावीर्यजी	श्री देवसेनजी
17.	श्री सौभाग्यजी	श्री पार्श्वस्वामीजी	श्री सुव्रतजी
18.	श्री दिनकरजी	श्री अभिधानजी	श्री जिनेन्द्रजी
19.	श्री व्रताधिजी	श्री मरूदेवजी	श्री सुपार्श्वजी
20.	श्री सिद्धिकरजी	श्री श्रीधरजी	श्री सुकोशलजी
21.	श्री शारीरिकजी	श्री सामकंबुजी	श्री अनंतकजी
22.	श्री कल्पद्रुमजी	श्री अग्निप्रभजी	श्री विमलजी
23.	श्री तीर्थादिजी	श्री अग्निदत्तजी	श्री अजितसेनजी
24.	श्री फलेशजी	श्री वीरसेनजी	श्री अग्निदत्तजी

धातकी खण्ड के पूर्व ऐरावत में

नं.	अतीत चौबीसी	वर्तमान चौबीसी	आगामी चौबीसी
1.	श्री वज्रस्वामीजी	श्री अपश्चिमजी	श्री विजयप्रभजी
2.	श्री इंद्रयत्नजी	श्री पुष्पदंतजी	श्री नारायणजी
3.	श्री सूर्यस्वामीजी	श्री अर्हंतजी	श्री सत्यप्रभजी
4.	श्री पुरूरवजी	श्री सुचरित्रजी	श्री महामृगेंद्रजी
5.	श्री स्वामीनाथजी	श्री सिद्धानंदजी	श्री चिंतामणिजी
6.	श्री अवबोधीजी	श्री नंदकजी	श्री आसोगिनजी
7.	श्री विक्रमसेनजी	श्री प्रकृपजी	श्री द्विमृगेंन्द्रजी
8.	श्री निर्धटिकजी	श्री उदयनाथजी	श्री उपवासितजी
9.	श्री हरींद्रजी	श्री रुकमेंद्रजी	श्री पद्मचंद्रजी
10.	श्री प्रतेरिकजी	श्री कृपालजी	श्री बोधकेंद्रजी
11.	श्री निर्बाणजी	श्री प्रेढ़ालजी	श्री चिंताहिकजी
12.	श्री धर्महेतुजी	श्री सिद्धेश्वरजी	श्री उत्तराहिकजी
13.	श्री चतुर्मुखजी	श्री अमृततेजजी	श्री अपाशितजी
14.	श्री जिनकृतेंद्रुजी	श्री जितेंद्रस्वामीजी	श्री देवजलजी
15.	श्री स्वयंकजी	श्री भोगलीजी	श्री नागरिकजी
16.	श्री विमलादित्यजी	श्री सर्वार्थजी	श्री अमोघजी
17.	श्री देवप्रभजी	श्री मेघानंदजी	श्री नागेंद्रजी
18.	श्री धरणेंद्रजी	श्री नंदिकेशजी	श्री निलोत्पलजी
19.	श्री तीर्थनाथजी	श्री हरनाथजी	श्री अप्रकंपजी
20.	श्री उदयानंदजी	श्री अधिष्ठायकजी	श्री पुरोहितजी
21.	श्री शिवार्थजी	श्री शांतिकजी	श्री उभयेंद्रजी
22.	श्री धार्मिकाजी	श्री कुंडपार्श्वजी	श्री निर्वचसजी
23.	श्री क्षेत्रस्वामीजी	श्री कुंडपार्श्वजी	निर्वचसजी
24.	श्री हरच्चंद्रजी	श्री विरोचनजी	श्री वियोषितजी

घातकी खण्ड के पश्चिम ऐरावत में

नं.	अतीत चौबीसी	वर्तमान चौबीसी	आगामी चौबीसी
1.	श्री सुमेरुकजी	श्री उपादितजी	श्री रवींद्रजी
2.	श्री जिनकृतजी	श्री जिनस्वामीजी (जयनाथजी)	श्री सुकुमालजी
3.	श्री ऋषिकेलिजी	श्री स्वामितजी	श्री पृथ्वीवंतजी
4.	श्री अशस्तदजी	श्री इंद्रजितजी	श्री कुलपरोधाजी
5.	श्री निर्धमजी	श्री पुष्पकजी	श्री धर्मनाथजी
6.	श्री कुटलिकजी	श्री मंडिकजी	श्री प्रियसोमजी
7.	श्री वर्द्धमानजी	श्री प्रहतजी	श्री वारूणजी
8.	श्री अमृतेंद्रजी	श्री मदनसिंहजी	श्री अभिनंदजी
9.	श्री शंखानंदजी	श्री हस्तनिधिजी	श्री सर्वभानुजी
10.	श्री कल्याणव्रतजी	श्री चंद्रपार्श्वजी	श्री सदष्टजी
11.	श्री हरिनाथजी	श्री अर्श्वबोधजी	श्री मौष्टिकजी
12.	श्री बाहुस्वामीजी	श्री जनकादिजी	श्री सुर्वणकेतुजी
13.	श्री भार्गवजी	श्री विभूतिकजी	श्री सोमचंद्रजी
14.	श्री सुभद्रजी	श्री कुमरीपिंडजी	श्री क्षेत्राधिपति
15.	श्री पतिपात्पजी	श्री सुवपिजी	श्री सौढ़ातिकजी
16.	श्री वियोषितजी	श्री हरिवासजी	श्री कूर्मेषुकजी
17.	श्री ब्रह्मचारीजी	श्री प्रियमित्रजी	श्री तमोरिपुजी
18.	श्री असंख्यागतिजी	श्री धर्मदेवजी	श्री देवतामित्रजी
19.	श्री चारित्रेशजी	श्री धर्मचंद्रजी	श्री कृतपार्श्वजी
20.	श्री पारिमाणिकजी	श्री प्रवाहितजी	श्री बहुनंदजी
21.	श्री कंबोजजी	श्री नंदिनाथजी	श्री अघोरिकजी
22.	श्री विधिनाथजी	श्री अश्वामिकजी	श्री निकंबुजी
23.	श्री कौशिकजी	श्री पूर्वनाथजी	श्री दृष्टिस्वामीजी
24.	श्री धर्मेशजी	श्री चित्रकजी	श्री वक्षेशजी

पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व ऐरावत में

नं.	अतीत चौबीसी	वर्तमान चौबीसी	आगामी चौबीसी
1.	श्री कृतांतजी	श्री निशामितजी	श्री जशोधरजी
2.	श्री ओबरिकजी	श्री अक्षपासजी	श्री सुव्रतजी
3.	श्री देवादित्यजी	श्री अचितकरजी	श्री अभयघोषजी
4.	श्री अष्टनिधिजी	श्री नयादिजी	श्री निर्वाणिकजी
5.	श्री प्रचंडजी	श्री पणंपंडुजी	श्री व्रतवसुजी
6.	श्री वेणुकजी	श्री स्वर्णनाथजी	श्री अतिराजजी
7.	श्री त्रिभाणुजी	श्री तपोनाथजी	श्री अशवनाथजी
8.	श्री ब्रह्मादिजी	श्री पुष्पकेतुजी	श्री अर्जुनजी
9.	श्री वज्रगंजी	श्री कर्मिकजी	श्री तपचंदजी
10.	श्री विरोहितजी	श्री श्री चंद्रकेतुजी	श्री शारीरिकजी
11.	श्री अपापकजी	श्री प्रहारितजी	श्री महसेनजी
12.	श्री लोकोत्तरजी	श्री वीतरागजी	श्री सुश्रावजी
13.	श्री जलधिजी	श्री उद्योतजी	श्री दृढ़प्रहारजी
14.	श्री विद्योतनजी	श्री तपोधिकजी	श्री अंबरिकजी
15.	श्री सुमेरूजी	श्री अतीतजी	श्री वृषातीतजी
16.	श्री सुभाषितजी	श्री मरूदेवजी	श्री तुंबरजी
17.	श्री वत्सलजी	श्री दामिकजी	श्री सर्वशीलजी
18.	श्री जिनालजी	श्री शिलादित्यजी	श्री प्रतिराजजी
19.	श्री तुषारिकजी	श्री स्वस्तिकजी	श्री जितेंद्रियजी
20.	श्री भुवनस्वामीजी	श्री वश्वनाथजी	श्री तपादिजी
21.	श्री सुकालिकजी	श्री शतकजी	श्री रत्नकरजी
22.	श्री देवाधिदेवजी	श्री सहस्तादिजी	श्री देवेशजी
23.	श्री आकाशिकजी	श्री तमोंकितजी	श्री लांछनजी
24.	श्री अबिकजी	श्री ब्रह्मांकजी	श्री प्रवेशजी

पुष्करार्थ द्वीप के पश्चिम ऐरावत में

नं.	अतीत चौबीसी	वर्तमान चौबीसी	आगामी चौबीसी
1.	श्री सुसंभवजी	श्री गांगेयजी	श्री अदोषितजी
2.	श्री पच्छाभजी	श्री नलवशाजी	श्री वृषभस्वामीजी
3.	श्री पूर्वांशजी	श्री भजिनजी	श्री विनयानंदजी
4.	श्री सौंदर्यजी	श्री ध्वजाधिकजी	श्री मुनिनाथजी
5.	श्री गैरिकजी	श्री मुभद्रजी	श्री इंद्रकजी
6.	श्री त्रिविक्रमजी	श्री स्वामीनाथजी	श्री चंद्रकेतुजी
7.	श्री नारसिंह जी	श्री हितक जी	श्री ध्वजादितय जी
8.	श्री मृगुवसु जी	श्री नंदिघोष जी	श्री वसुबोध जी
9.	श्री सोमेश्वर जी	श्री रूपवीर्यजी	श्री वसुकीर्तिजी
10.	श्री सुभाभुजी	श्री व्रजनाभजी	श्री धर्मबोधजी
11.	श्री अपापमल्ल जी	श्री संतोष जी	श्री देवांगजी
12.	श्री विबोधजी	श्री सुधर्माजी	श्री मरीचिकजी
13.	श्री संजमिक जी	श्री फणादिजी	श्री सुजीवजी
14.	श्री माधीनाजी	श्री वीरचंन्द्रजी	श्री यशोधरजी
15.	श्री अश्वतेजाजी	श्री मोघानिकजी	श्री गौतमजी
16.	श्री विद्याधरजी	श्री स्वेच्छाजी	श्री मुनिसुद्धजी
17.	श्री सुलोचनजी	श्री कोपक्षय जी	श्री प्रबोधजी
18.	श्री माननिधिजी	श्री अकामजी	श्री शतानिकजी
19.	श्री पुडरिकजी	श्री संतोषषितजी	श्री चारित्रजी
20.	श्री चित्रगणजी	श्री शत्रुसेनजी	श्री शतानंदजी
21.	श्री माणहीदुजी	श्री क्षेमावतजी	श्री वेदार्थनाथजी
22.	श्री सर्वाकलजी	श्री दयानाथजी	श्री सुधानाथजी
23.	श्री भूरिश्रवाजी	श्री कीर्तिनाथजी	श्री ज्योतिर्मुखजी
24.	श्री पुण्यांगजी	श्री शुभनाथजी	श्री सूर्याकनाथजी

द्वीपों में कहां क्या है–प्रथम जम्बूद्वीप में, द्वितीय धातकीखण्ड में और तृतीय पुष्करार्ध के आधे भाग में मनुष्यों का आवास है अर्थात् इन ढाई द्वीपों में भोगभूमि और कर्मभूमियों में मनुष्यों का जन्म होता रहता है। पुष्करार्ध द्वीप के बीचों–बीच में चूड़ी के समान आकार वाला गोलाकार मानुषोत्तर पर्वत है। इस पर मनुष्यों का रहना वर्जित है।

इससे आगे आधे पुष्करार्धमें और समस्त असंख्यात द्वीपों में तथा स्वंयभूरमण द्वीप के आधे भाग में तिर्यज जीवों का निवास है। ये तिर्यञ् भोगभूमिज हैं। युगल ही उत्पन्न होते हैं, एक पल्य की उत्कृष्ट आयु प्राप्त करते हैं और अन्त में मरकर देवगति को प्राप्त कर लेते हैं। जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्करार्ध और स्वयंभूरमण नामक जो चार द्वीप हैं उनको छोड़कर शेष असंख्यात द्वीपों में उत्पन्न हुए जो पंचेन्द्रिय संज्ञी पर्याप्तक तिर्यञ्च जीव हैं वे पल्यप्रमाण आयु से युक्त, दो हजार धनुष ऊँचे, सुकुमार, कोमल अंगो वाले, मंदकषायी, फलभोजी हैं। ये युगल उत्पन्न होकर चतुर्थ भक्त से भोजन करते हैं। ये सब मरकर नियम से सुरलोक में जाते हैं। उनकी उत्पत्ति सर्वदर्शियों द्वारा अन्यत्र नहीं कही गई है।

इसके अनन्तर आधे स्वयंभूरमण द्वीप में और स्वयंभूरमण समुद्र में जो तिर्यञ्च हैं वे कर्मभूमियां कहलाते हैं अर्थात् स्वयंभूरमण द्वीप में भी बीचों–बीच में चूड़ी के समान आकार वाला मानुषोत्तर पर्वत के सदृश एक पर्वत है उसका नाम स्वयंप्रभ पर्वत है। इस पर्वत से इधर–इधर भोगभूमिज तिर्यञ्च हैं और उसके परे कर्मभूमिज तिर्यञ्च हैं। भोगभूमिज तिर्यञ्चों में विकलत्रय जीव (दो इंद्रिय, तीन इंद्रिय, चार इन्द्रिय) नहीं होते हैं।

अकृत्रिम जिनमंदिर : जम्बूद्वीप से लेकर तेरहवें रुचिकवरद्वीप तक ही अकृत्रिम, अनादिनिधन जिनमंदिर हैं, आगे नहीं हैं। इन सब मंदिरों की संख्या 458 है।

समुद्रों में कहां–कैसा जल है–लवण समुद्र, वारुणीवर समुद्र, घृतवर समुद्र और क्षीरवर समुद्र इन चारों का जल अपने नामों के अनुसार है अर्थात् लवण समुद्र का जल खारा है, वारूणी समुद्र का जल मद्य के समान है, घृतवर समुद्र का जल घी के समान है और क्षीरवर समुद्र का जल दूध के समान है। इसी क्षीरवर समुद्र के जल से तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है।

कालोदधि समुद्र, पुष्करवर समुद्र और स्वयंभूरमण समुद्र इन तीनों के जल का स्वाद सामान्य जल पुष्करार्ध की तरह होता है।

शेष सभी समुद्रों का जल इक्षुरस (गन्ने के रस) के समान मधुर है।

लवण समुद्र, कालोदधि और स्वयंभूरमण समुद्र में ही जलचर जीव हैं, अन्य किसी समुद्र में नहीं हैं। इस प्रकार से मध्यलोक का अतिसंक्षिप्त वर्णन किया है।

टिप्पणी : यह बड़ा योजन है। इसमें 200 कोश माने गये हैं।

6. कुलाचल पर्वतों के नाम :

हिमवान्	महाहिमवान्	निषध
रुक्मि	शिखरी	और

यह छह कुलाचल पर्वत पूर्व से पश्चिम तक चलते हुए, दोनों तरफ से लवण समुद्र को छूते हुए जम्बू द्वीप को 7 क्षेत्रों में बांटते हैं ।

7 क्षेत्रों के नाम :

भरत	हैमवत	हरि	विदेह
रमयक	हैरण्यवत	ऐरावत।	

भरत क्षेत्र से विदेह क्षेत्र तक इन कुलाचल पर्वतों का और क्षेत्रों का विस्तार दोगुना होता गया है।

फिर विदेह क्षेत्र से अंतिम ऐरावत क्षेत्र तक यह आधा–आधा होता गया है ।

– जम्बू–द्वीप के विदेह क्षेत्र में बिलकुल बीचों–बीच एक लाख चालीस (1,00,040 योजन) ऊँचा ''सुमेरु–पर्वतराज'' है । इतनी ही ऊंचाई मध्य लोक की है ।

इसी सुमेरु–पर्वतराज पर पृथ्वी–तल से 99,000 योजन ऊपर स्थित ''पाण्डुक–शिला'' पर सौधर्म–इंद्र ''भरत–क्षेत्र'' के तीर्थंकरों का जन्माभिषेक किया करते हैं ।

– सुमेरु–पर्वत और पहले सौधर्म–स्वर्ग (उर्ध्व–लोक) के बीच में ''एक बाल'' का अंतर है

जम्बू–द्वीप के 7 क्षेत्रों के ''भरत–क्षेत्र'' में हम और आप रहते हैं ।

''भरत–क्षेत्र'' की और उसमे हम कहाँ रहते हैं उसकी चर्चा आगे करेंगे ।

जम्बूद्वीप भरत क्षेत्र

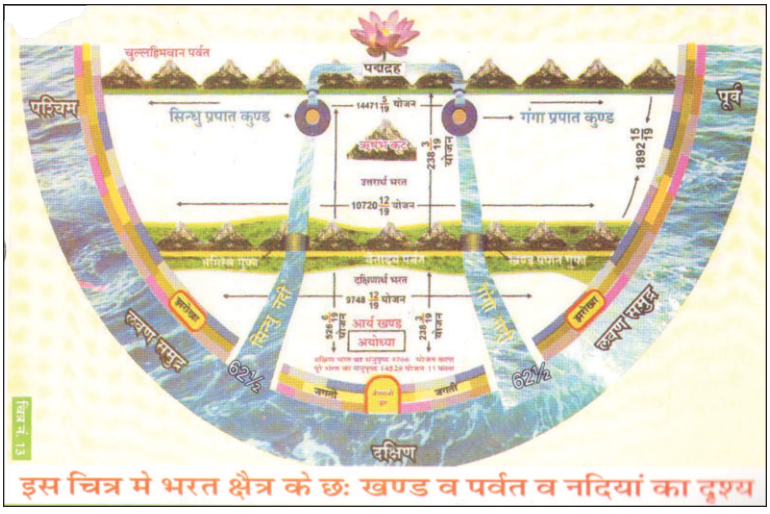

इस चित्र मे भरत क्षेत्र के छः खण्ड व पर्वत व नदियां का दृश्य

हमने पढ़ा कि जम्बू–द्वीप को 6 कुलाचल पर्वत, पूर्व से पश्चिम (दोनों तरफ से लवण समुद्र को छूते हुए) तक जाते हुए, 7 क्षेत्रों में विभाजित करते हैं।

इन सात में सबसे नीचे दक्षिण दिशा में है हमारा ''भरत–क्षेत्र'' स्थित है।

– भरत–क्षेत्र का विस्तार जम्बू–द्वीप का 1 / 190वाँ , याने 1,00,000 / 190 या 526 6 / 19 योजन है।

– भरत–क्षेत्र के उत्तर–दिशा में पहला कुलाचल पर्वत (हिमवान् पर्वत) है, पूर्व–पश्चिम और दक्षिण दिशाओं में लवण–समुद्र है।

जैसे जम्बू–द्वीप में 6 कुलाचल पर्वत हैं, उसी तरह भरत–क्षेत्र में बीच में ''विजयार्ध–पर्वत'' है, जो इसे 2 भागों में विभाजित करता है ।

हिमवान् पर्वत से गंगा और सिंधु नदियां विजयार्ध–पर्वत से होती हुईं दक्षिण में लवण–समुद्र में गिरती हैं जिसके कारण ये दोनों भाग आगे 3–3 खण्डों में बंटे हुए हैं ।

इस प्रकार भरत–क्षेत्र में ''छह–खण्ड'' हैं जिनमें 3 विजयार्ध पर्वत के ऊपरी भाग में हैं और 3 विजयार्ध पर्वत के निचले भाग में । नीचे के जो 3 खण्ड हैं, उनमे से बीच वाला ''आर्य–खण्ड'' है । बाकी 5 ''मलेच्छ खण्ड'' कहलाते हैं । बिलकुल ऐसा ही जम्बू–द्वीप में सबसे ऊपर स्थित ''ऐरावत–क्षेत्र'' है ... वहाँ भी यही सब है, किन्तु गंगा–सिंधु के स्थान पर रक्त और रक्तोदा नदियां बहती हैं, जो विजयार्ध–पर्वत से होती हुई ऐरावत क्षेत्र को छह–खण्डों में विभक्त करती हैं ।

– सो, ऐरावत क्षेत्र में भी भरत–क्षेत्र कि तरह एक आर्य–खण्ड है ।।

जम्बूद्वीप – भरत क्षेत्र – आर्यखण्ड

– भरत–क्षेत्र के छह–खण्डों में 5 मलेच्छ–खण्ड हैं और 1 आर्यखण्ड
– सिर्फ आर्यखण्ड में ही धर्म–तीर्थ की प्रवृति होती है, इसमें ही जीव मोक्ष का उपाय कर सकते हैं ।
– सभी श्लाका–पुरुष (तीर्थंकर, चक्रवर्ती इत्यादि) आर्यखण्ड में ही जन्म लेते हैं ।
– बाकी के 5 मलेच्छ खण्डों में नास्तिक लोग रहते हैं।

जम्बूद्वीप – विदेह–क्षेत्र

– भरत और ऐरावत क्षेत्रों में तो केवल एक ही काल में अरहंत भगवान् हुआ करते हैं, किन्तु विदेह–क्षेत्र में तो सदा ही धर्म की धारा बहती रहती है। विदेह–क्षेत्र में सदैव केवलज्ञानी, तीर्थंकर, और विद्याधारी साधुओं का समागम बना रहता है।
– जम्बू–द्वीप के 6 कुलाचल पर्वतों में नील और निषेध पर्वतों के बीच में स्थित ''विदेह–क्षेत्र'' है । और इसका विस्तार 33684 4/19 योजन है ।
– विदेह–क्षेत्र के बीचों–बीच सुमेरु–पर्वतराज विराजित है । सुमेरु–पर्वत के :
१ – पश्चिम में (पश्चिम–विदेह–क्षेत्र), और २ – पूर्व में (पूर्व–विदेह–क्षेत्र) नामक 2 भाग हो गए हैं।
– पश्चिम विदेह–क्षेत्र में ''सीतोदा'' तथा पूर्वी–विदेह–क्षेत्र में ''सीता'' नदी बहती है। जो पूर्वी और पश्चिमी विदेह–क्षेत्रों को 2–2 भागों में विभक्त करती है ।
आगे प्रत्येक भाग में क्रम से 4 वक्षार पर्वत और 3 विभंगा नदियां (पर्वत फिर नदी फिर पर्वत) होने से हर भाग के 8–8 हिस्से हो गए हैं । और इस तरह से विदेह–क्षेत्र के 8 x 4 = 32 हिस्से हैं, जिन्हे 32 विदेह–देश भी कहते हैं ।
अब इन विदेह–देशों में भी हर एक में ''भरत–क्षेत्र'' की तरह ही विजयार्ध पर्वत और 2 नदियां होने से इनके भरत–क्षेत्र की तरह ही 6–6 खण्ड हो गए हैं, जिनमे 5 मलेच्छ–खण्ड हैं और 1 आर्यखण्ड है।
– इन आर्यखण्डों में सदा चौथा–काल (दुषमा–सुषमा) रहता है, यहाँ कभी भी काल–परिवर्तन नहीं होता है।
– विद्यमान तीर्थंकर यहाँ हैं।
– विदेह–क्षेत्र रोग, महामारी, इतियों आदि से रहित है, यहाँ कुदेव–कुलिंगी और कुमति वाले जीव नहीं होते हैं।
– विदेह–क्षेत्र में 2 उत्तम भोग–भूमियां ''उत्तरकुरु'' व ''देवकुरु'' भी हैं ।

दूसरा द्वीप : घातकी खण्ड द्वीप

– यह मध्य–लोक में दूसरा–द्वीप है, जिसका विस्तार ''चार लाख योजन'' है।

– इसके नीचे (दक्षिण में) और ऊपर (उत्तर में) लवण–समुद्र और कालोदधीसमुद्र को स्पर्श करते हुए, 2 '' इश्वाकार–पर्वत'' हैं । जिससे धातकीखण्ड के 2 हिस्से हो जाते हैं।।

– अब जो पूर्व धातकीखण्ड और पश्चिम धातकीखण्ड हैं। उनकी रचना ''जम्बू–द्वीप'' जैसी ही है।

जैसे जम्बू–द्वीप में भरत, ऐरावत आदि क्षेत्र हैं, हिमवान, महाहिमवान् आदि कुलाचल पर्वत हैं, गंगा–सिंधु आदि नदियां है, धातकीखण्ड के दोनों भागों में वैसी ही रचना है ।

– पूर्व धातकीखण्ड के मध्य में या यूँ कहिये कि जम्बू–द्वीप के सुमेरु–पर्वत के सीधे–हाथ (पूर्व) में धातकीखण्ड में ''विजय–मेरु'' है, और ऐसे ही पश्चिम धातकीखण्ड में ''अचल–मेरु'' है ।

– दोनों ही धातकीखण्डों में जम्बू–द्वीप कि तरह भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत और ऐरावत क्षेत्र हैं ।

तो इस तरह से धातकीखण्ड में 2 भरत, 2 ऐरावत और बाकी सब 2–2 क्षेत्र हैं।

– धातकीखण्ड को चारों तरफ से घेरे हुए आठ लाख योजन विस्तार वाला ''कालोद–समुद्र'' है।

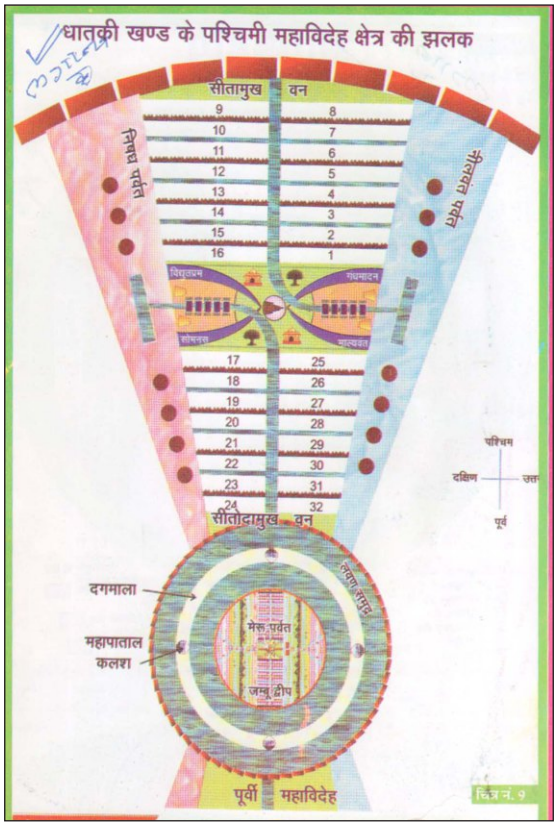

घातकी खण्ड के पूर्व भारत में

नं.	अतीत चौबीसी	वर्तमान चौबीसी	आगामी चौबीसी
1.	श्री रत्नप्रभजी	श्री युगादिनाथजी	श्री सिद्धनाथजी
2.	श्री अमितजी	श्री सिद्धांतनाथजी	सम्यग्नाथजी
3.	श्री असंभवजी	श्री महेशजी	श्री जिनेन्द्रजी
4.	श्री अकलंकजी	श्री परमार्थजी	श्री संप्रतिजी
5.	श्री चंद्रस्वामीजी	श्री समुद्धरजी	श्री सर्वस्वामीजी
6.	श्री शुभंकरजी	श्री भूधरजी	श्री मुनिनाथजी
7.	श्री सत्यनाथजी	श्री उद्योतजी	श्री विशिष्टनाथजी
8.	श्री सुंदरनाथजी	श्री आर्थवजी	श्री अपरनाथजी
9.	श्री पुरंदरनाथजी	श्री अभयजी	श्री ब्रह्मशाँतिजी
10.	श्री स्वामीनाथजी	श्री अप्रकंपजी	श्री पर्वनाथजी
11.	श्री देवदत्तजी	श्री पद्मनाथजी	श्री कार्मुकजी
12.	श्री वासवदत्तजी	श्री पद्मनंदजी	श्री ध्यानवरजी
13.	श्री श्रीश्रेयांसजी	श्री प्रियंकरजी	श्री श्रीकल्पनाजी
14.	श्री विश्वरूपजी	श्री सुकृतनाथजी	श्री संवरनाथजी
15.	श्री पिस्तेजजी	श्री भद्रेश्वरजी	श्री स्वस्थनाथजी
16.	श्री प्रतिबोधजी	श्री मुनिचंद्रजी	श्री आनंदजिनजी
17.	श्री सिद्धार्थनाथजी	श्री पंचमुष्टिजी	श्री रविचंद्रजी
18.	श्री संयमनाथजी	श्री त्रिमुष्टिजी	श्री प्रभवनाथजी
19.	श्री अमलनाथजी	श्री गांगिकजी	श्री सानिधनाथजी
20.	श्री देवेन्द्रनाथजी	श्री प्रवणवजी	श्री सुकर्णजी
21.	श्री प्रवरनाथजी	श्री सर्वांगजी	श्री सुकर्माजी
22.	श्री विश्वसेनजी	श्री ब्रह्मेन्द्रजी	श्री अममजी
23.	श्री मेघनंदनजी	श्री इन्द्रदत्तजी	श्री पार्श्वनाथजी
24.	श्री सर्वज्ञनाथजी	श्री जिनपतिजी	श्री शाश्वतनाथजी

घातकी खण्ड के पश्चिम भरत में

नं.	अतीत चौबीसी	वर्तमान चौबीसी	आगामी चौबीसी
1.	श्री वृषभनाथजी	श्री विश्वेंदुजी	श्री रत्नकेशजी
2.	श्री प्रियमित्रजी	श्री करण(कपिल) नाथजी	श्री चक्रहस्तजी
3.	श्री शाँतनुजी	श्री वृषभनाथजी	श्री सांकृतजी
4.	श्री सुमृदुजी	श्री प्रियतेजजी	श्री परमेश्वरजी
5.	श्री अतीतजी	श्री विमर्षजिनजी	श्री सुमूर्तिजी
6.	श्री अव्यक्तजी	श्री प्रश्मजिनजी	श्री मुहूर्तिकजी
7.	श्री कलाशतजी	श्री चारित्रनाथजी	श्री निकेशजी
8.	श्री सर्वजिनजी	श्री प्रीदित्यजी	श्री प्रशस्तिकजी
9.	श्री प्रबुद्धजी	श्री मंजुकेशीजी	श्री निराहारजी
10.	श्री प्रवृजिनजी	श्री पीतवासजी	श्री अमूर्तिजी
11.	श्री सौधर्मजी	श्री सुररिपुजी	श्री द्विजनाथजी
12.	श्री तमोदीपजी	श्री दयानाथजी	श्री श्वेतांगजी
13.	श्री वज्रसेनजी	श्री सहस्त्रभूजजी	श्री चारूनाथजी
14.	श्री बुद्धिनाथजी	श्री जिनसिंहजी	श्री देवनाथजी
15.	श्री प्रबंधनाथजी	श्री रेपकजी	श्री वयाधिकजी
16.	श्री अजितस्वामीजी	श्री बाहुजिनजी	श्री पुष्पनाथजी
17.	श्री प्रमुखजिनजी	श्री पल्लिजी	श्री नरनाथजी
18.	श्री पल्पोपमजी	श्री आयोगजी	श्री प्रतिकृतजी
19.	श्री अर्कोपमजी	श्री योगनाथजी	श्री मृगेन्द्रनाथजी
20.	श्री तिष्टितजी	श्री कामरिपुजी	श्री तपोनिधिकजी
21.	श्री मृगनाभजी	श्री अरणबाहुजी	श्री अचलनाथजी
22.	श्री देवेन्द्रजी	श्री नेमिकनाथजी	श्री आरण्यकजी
23.	श्री प्रायच्छितजी	श्री गर्भज्ञानीजी	श्री दशाननाथजी
24.	श्री शिवनाथजी	श्री अजितजी	श्री शांतिकनाथजी

तीसरा द्वीप : पुष्करवर द्वीप

– कालोद–समुद्र को घेरे हुए सोलह लाख योजन विस्तार वाला मध्य–क्षेत्र का तीसरा ''पुष्करवर द्वीप'' है।

– इसके बिलकुल बीचों–बीच चूड़ी के आकार वाला ''मानुषोत्तर पर्वत'' है ।

– कालोद–समुद्र से मानुषोत्तर पर्वत तक के आधे क्षेत्र को ''पुष्करार्द्धद्वीप'' कहते हैं।

– इसके अंदर की तरफ भी ''धातकीखण्ड द्वीप'' की तरह ही उत्तर और दक्षिण में दो '' इश्वाकार–पर्वत'' हैं । जिससे पुष्करार्द्धद्वीप के 2 हिस्से हो जाते हैं ।

अब जो पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप और पश्चिम पुष्करार्द्धद्वीप हैं उनकी रचना हू–ब–हू ''धातकीखण्ड द्वीप'' जैसी ही समझनी चाहिए। तो इस प्रकार पुष्करार्द्धद्वीप में भी धातकीखण्ड की तरह 2 भरत, 2 ऐरावत और बाकी सब 2–2 क्षेत्र हैं ।

– पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप के मध्य में या यूँ कहिये कि जम्बू–द्वीप के ''सुमेरु–पर्वत'' और पूर्व धातकीखण्ड के ''विजय–मेरु'' के सीधे–हाथ (पूर्व) में ''मंदर–मेरु'' है, और ऐसे ही पश्चिम पुष्करार्द्धद्वीप में ''विद्युन्माली–मेरु'' हैं ।

इन्हे ही ''पंच–मेरु'' कहते हैं ।

– सुमेरुपर्वत 1,00,040 योजन है, बाकी के ये चारों मेरु 85,000 योजन ऊँचे हैं ।

पुष्करार्थ के पूर्व भरत में

नं.	अतीत चौबीसी	वर्तमान चौबीसी	आगामी चौबीसी
1.	श्री मदगतजी	श्री जगन्नाथजी	श्री वसंतध्वजजी
2.	श्री मूर्तिस्वामीजी	श्री प्रभासनाथजी	श्री त्रिमातुलजी
3.	श्री निरागस्वामीजी	श्री सरस्वामीजी	श्री अघटितजी
4.	श्री प्रलंबितजी	श्री भरतेशजी	श्री त्रिखंभजी
5.	श्री पृथ्वीपतिजी	श्री धर्माननजी	श्री अचेलजी
6.	श्री चारित्रनिधिजी	श्री विख्यातजी	श्री प्रवादिकजी
7.	श्री अपराजितजी	श्री अवसानकजी	श्री भूमानंदजी
8.	श्री सुबोधकजी	श्री प्रबोधकजी	श्री त्रिनयनजी
9.	श्री बुधेशजी	श्री तपोनाथजी	श्री सिद्धांतजी
10.	श्री वैतालिकजी	श्री पाठकजी	श्री प्रथगजी
11.	श्री त्रिमुष्टिकजी	श्री त्रिकरजी	श्री भद्रेगजी
12.	श्री मुनिबोधजी	श्री शोगतजी	श्री गोस्वामीजी
13.	श्री तीर्थस्वामीजी	श्री वाशाजी	श्री प्रवासिकजी
14.	श्री धर्माधिकजी	श्री स्वामीजी	श्री मंडलौकजी
15.	श्री वमेशजी	श्री सुकर्मेशजी	श्री महावसुजी
16.	श्री ममादिकजी	श्री कर्मोतिकजी	श्री उदीयंतुजी
17.	श्री प्रभुनाथजी	श्री अमलेदजी	श्री दर्दुरिकजी
18.	श्री अनादिजी	श्री ध्वजांशिकजी	श्री प्रबोधनाथजी
19.	श्री सर्वतीर्थजी	श्री प्रसादजी	श्री अभयांकजी
20.	श्री निरूपमजी	श्री विपरीतजी	श्री प्रमोदजी
21.	श्री कुमारिकजी	श्री मृगांकजी	श्री दृफारिकजी
22.	श्री विहराग्रजी	श्री कफाटिकजी	श्री व्रतस्वामीजी
23.	श्री धमेशरजी	श्री गजेंद्रजी	श्री निधानजी
24.	श्री विकासजी	श्री ध्यानज्ञजी	श्री त्रिकर्मकजी

पुष्करार्ध द्वीप के पश्चिम भरत में

नं.	अतीत चौबीसी	वर्तमान चौबीसी	आगामी चौबीसी
1.	श्री पद्मचंद्रजी	श्री पद्मपदजी	श्री प्रभावकजी
2.	श्री रक्तांगजी	श्री प्रभावकनाथजी	श्री विनयेंद्रजी
3.	श्री आयोगिकजी	श्री योगेश्वरजी	श्री सुभावस्वामीजी
4.	श्री सर्वार्थ जी	श्री बलजी	श्री दिनकरजी
5.	श्री ऋषिनाथजी	श्री सुषमांगजी	श्री अगस्तेयजी
6.	श्री हरिभद्रजी	श्री बलातीतजी	श्री धनदजी
7.	श्री गणाधिपजी	श्री मृगांकजी	श्री पौरवनाथजी
8.	श्री पारत्रिकजी	श्री कलंबकजी	श्री जिनदत्तजी
9.	श्री ब्रह्मजी	श्री ब्रह्मनाथजी	श्री पार्श्वनाथजी
10.	श्री मुनीन्द्रजी	श्री निषेधकजी	श्री मुनिसिंहजी
11.	श्री दीपकजी	श्री पापहरजी	श्री आस्तिकजी
12.	श्री राजषिंजी	श्री सुस्वामीजी	श्री भवानंदजी
13.	श्री विशाखजी	श्री मुक्तिचंद्रजी	श्री नृपनाथजी
14.	श्री अचिंतित जी	श्री अप्राशिकजी	श्री नारायणजी
15.	श्री रविस्वामी	श्री नदीतटजी	श्री प्रथमांकजी
16.	श्री सोमदत्तजी	श्री मलधारीजी	श्री भूपतिजी
17.	श्री जयजी	श्री सुसंयमजी	श्री दृष्टीजी
18.	श्री मोक्षजी	श्री मलयसिंहजी	श्री भवभीरूकजी
19.	श्री अग्निभानुजी	श्री अक्षोभजी	श्री नंदननाथजी
20.	श्री धनुष्कांगजी	श्री देवधरजी	श्री भार्गवनाथजी
21.	श्री रोमांचितजी	श्री प्रयच्छजी	श्री परानस्युजी
22.	श्रीमुक्तिनाथजी	श्री आगमिकजी	श्री किल्विषादजी
23.	श्री प्रसिद्धजी	श्री विनीतजी	श्री नवनाशिकजी
24.	श्री जिनेशजी	श्री रतानंदजी	श्री भरतेशजी

अढ़ाई–द्वीप

– जम्बू–द्वीप, लवण–समुद्र, धातकीखण्ड–द्वीप, कालोद–समुद्र और पुष्करार्ध–द्वीप का मानुषोत्तर पर्वत तक का आधा भाग (पुष्करार्द्धद्वीप), ''अढ़ाई–द्वीप'' कहलाता है ।

– इसका विस्तार 45 लाख योजन का है ।

– मानुषोत्तर पर्वत पर केवल ही मनुष्य जा सकते हैं। इसके आगे के असंख्यात द्वीपों में ''जघन्य–भोग–भूमि'' हैं, जिनमे असंख्यात तिर्यञ्च–युगल रहते हैं ।

– इन अढ़ाई–द्वीपों से आगे कोई ऋद्धिधारी या विद्याधर मनुष्य भी नहीं जा सकता ।

पंच–मेरु

– जम्बू–द्वीप में 1, धातकीखण्ड में 2 और पुष्करार्द्धद्वीप में 2 मेरु पर्वत हैं ।

इस प्रकार अढ़ाई–द्वीपों में 5 मेरु पर्वत हैं –

पंच–मेरु :–(पश्चिम से पूर्व) ...

1 'विद्युन्माली–मेरु'', (पश्चिम पुष्करार्द्धद्वीप के मध्य में)

2 ''अचल–मेरु'', (पश्चिम धातकीखण्ड के मध्य में)

3 ''सुमेरु–पर्वत'', (जम्बू–द्वीप के मध्य में)

4 ''विजय–मेरु'', (पूर्व धातकीखण्ड के मध्य में)

5 ''मंदर–मेरु'', (पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप के मध्य में)

पांचों मेरु पर्वतों पर कुल 80 अकृत्रिम चैत्यालय हैं ।

तीस– चौबीसी

– हम पूजन में ''तीस– चौबीसी'' को पूजन सामग्री चढ़ाते हैं, सो, कौनसी हैं वो तीस– चौबीसी ?

इन अढ़ाई द्वीपों के (जम्बू–द्वीप में 1, धातकीखण्ड में 2 और पुष्करार्द्धद्वीप में 2) :–

१ – पंच भरत

२ – पंच ऐरावत

में भूत–भविष्य और वर्तमान की 30 चौबीसी ...

5(भरत). 5(एरावत) = 10

10 X 3 (भूत, भविष्य एवं वर्तमान) = 30

एक चौबीसी में 24 तीर्थंकर भगवान्

30 चौबीसी में कुल 30 X 24 = 720 तीर्थंकर भगवानों को अर्घ्य चढ़ाते हैं ।

पंच-मेरु - सुमेरु-पर्वत

हमने पढ़ा कि, मध्य–लोक के बिल्कुल बीचों–बीच स्थित जम्बू–द्वीप के विदेह क्षेत्र में बिलकुल बीचों–बीच एक लाख चालीस (1,00,040 योजन) ऊँचा ''सुमेरु–पर्वतराज'' शोभायमान है ।

– सुमेरु–पर्वत :–

भूमि के अंदर (नींव) 1,000 योजन

भूमि के ऊपर 99,000 योजन

और अंत में 40 योजन ऊँची चूलिका (चोटी) है।

– नींव के बाद, पृथ्वी के तल पर इसका विस्तार 10,000 योजन का है। जो की नीचे से ऊपर चोटी तक पहुँचते पहुँचते 4 योजन का रह जाता है।

– सुमेरु–पर्वतराज पर चार वन हैं ।

१ – भद्रसाल वन :– पृथ्वी तल पर है ।

२ – नंदन वन :– 500 योजन ऊंचाई पर है ।

३ – सोमनस वन :– नंदन वन से 62,500 योजन ऊपर ।

४ – पाण्डुक वन :– सोमनस वन से 36,000 योजन ऊपर जाकर ।

प्रत्येक वन के चारों दिशाओं में एक–एक मन्दिर है। सो, इस तरह सुमेरु पर्वत पर 4 x 4 = 16 अकृत्रिम मन्दिर और पांचों मेरु पर्वतों पर कुल 80 अकृत्रिम मन्दिर हैं।

आंठवा द्वीप – नंदीश्वर द्वीप

– इसका विस्तार 163 करोड़ 84 योजन है ।

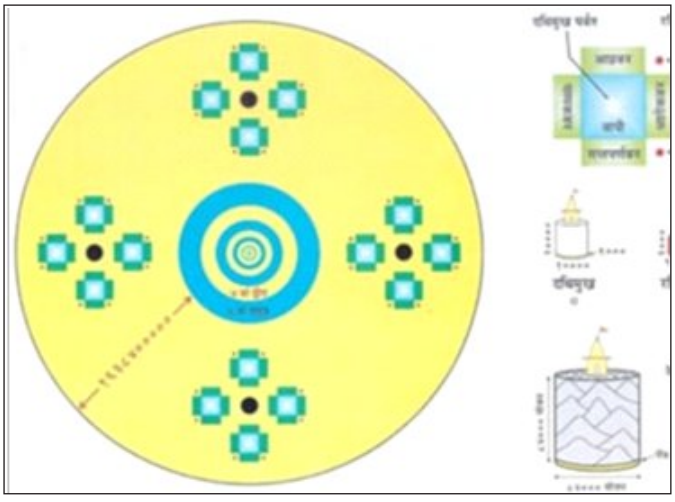

– यह मध्य लोक का आंठवा–द्वीप है ।

– नंदीश्वर द्वीप पर 52 अकृत्रिम जिनालय हैं ।

– हर जिनालय में 108–108 रत्न व स्वर्णमयी 500 धनुष ऊँची अनादि–निधन पद्मासन मुद्रा में 5616 भव्य–प्रतिमाएं विराजमान हैं ।

– ''अष्टानिका पर्व'' मे ''नंदीश्वर द्वीप'' के विशेष महत्व है ।

– अष्टानिका पर्व अर्थात कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ महीनो के अंतिम आठ दिनों में (अष्ठमी से पूर्णिमा तक) सौधर्म आदि इंद्र व देवता भक्ति–भाव से आठ दिनों तक अखण्ड रूप से पूजा करते हैं।

लेकिन, क्यूंकि मनुष्य नंदीश्वर द्वीप तक नहीं जा सकते इसलिए वह अपने अपने मंदिरों में ही नंदीश्वर द्वीप की रचना करके पूजा करते हैं।

यहां पर प्रत्येक तीर्थंकर के कल्याणक दिवस पर देवतागण दर्शन करने पधारते है।

मध्य-लोक का सारांश

उर्ध्व लोक को पढ़ने से पहले मध्य–लोक के सम्बन्ध में आये कुछ प्रश्नों के उत्तरों को मालूम कर लेना चाहिए ।

मध्य-लोक में हम आज कहाँ रहते हैं ?

पहले द्वीप ''जम्बू–द्वीप'' के दक्षिणी भाग में स्थित ''भरत–क्षेत्र'' के आर्यखण्ड में भारत–वर्ष में निवास करते हैं।

भरत–क्षेत्र के आर्यखण्ड के मध्य में स्थित ''अयोध्या–नगरी'' है जिसके :

– 1,000 योजन (40 लाख मील) पश्चिम में सिंधु–नदी और पूर्व में गंगा नदी बहते हुए नीचे दक्षिण में जा कर लवण समुद्र में मिलती हैं ।

– अयोध्या के नीचे दक्षिण में लगभग 119 योजन (4,76,000 मील) दूर लवण समुद्र है और ऊपर इतनी ही दूरी पर विजयार्ध पर्वत है ।

यह भी समझना चाहिए कि जिसे विज्ञान अर्थ (earth) के रूप में विश्व मानता है वह उस पृथ्वी का diameter 7 926.3352 mil मे बताता है, जब कि हमने पढ़ा था कि :

भरत–क्षेत्र का विस्तार जम्बू–द्वीप का 1/90वाँ, याने 1,00,000/190 या 526 सही 6/19 योजन है। याने 2,10,5263 2/3 मील है। इसका मतलब कि आर्यखण्ड का बहुत सारा क्षेत्र आज भी विज्ञानियों के ज्ञान के परे है ।

वर्तमान में जो गंगा–सिंधु नदियां हमं नजर आती हैं, हिमालय इत्यादि पर्वत जो दिखते हैं, सब

कृत्रिम हैं । अकृत्रिम नदी, समुद्र और पर्वतों के ये सब उपनदी, उपसमुद्र, उपपर्वत मानने चाहिए ।

मनुष्य लोक का विस्तार 45 लाख योजन कैसे ?

मध्य लोक के बिल्कुल बीचों–बीच थाली के आकार का 1,00,000 योजन विस्तार वाला पहला द्वीप ''जम्बू–द्वीप'' है ।

नोट : विस्तार का मतलब होता है कि एक छोर से दूसरे छोर तक जाना ।

तो चलिए फिर पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप के मानुषोत्तर पर्वत से शुरू करते हैं, सबका विस्तार जोड़ते हुए, पश्चिम पुष्करार्द्धद्वीप के मानुषोत्तर पर्वत तक पहुँचने में

8 + 8 + 4 + 2 + 1 + 2 + 4 + 8 + 8 = 45 लाख योजन (मानुषोत्तर पर्वत का विस्तार)

अढ़ाई द्वीप के बाहर भूमियों की कैसी स्थिति है ?

अढ़ाई द्वीप के बाहर बीच में असंख्यात समुद्रों और द्वीपों में जघन्य भोग–भूमि की रचना है ।

और जैसे पुष्करवर द्वीप में मानुषोत्तर पर्वत है वैसे ही अंतिम स्वयंभूरमण द्वीप के बीच में नागेन्द्र स्वयंप्रभ नामका पर्वत है जिसके पार फिर स्वयंभूरमण द्वीप और स्वयंभूरमण–समुद्र में ''कर्म–भूमि'' है ... वहाँ विदेह क्षेत्र की तरह सदा चौथा काल और कर्मभूमि बनी रहती है, किन्तु विशेष बात ये है कि ''वहाँ मनुष्यों का अभाव हैं ।

और अंत में

ये सब भूगोल हम क्यूँ पढ़ें ?

जरुरी होता नहीं अगर तो क्यूँ महान आचार्य इन महान ग्रंथों की रचना करते ?

इसकी उपयोगिता है, इसीलिए तो चार अनुयोगों में से एक करणानुयोग कहा है ।

12 भावना में लोक–भावना भाने के लिए लोक का अल्प–ज्ञान होना तो आवश्यक लगता ही है।

3. उर्ध्व–लोक

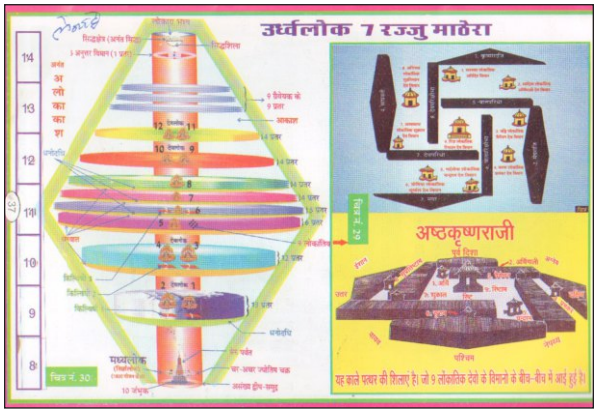

– मध्य–लोक के ऊपर लोक के अंत तक उधर्व–लोक है ।

– मध्य–लोक में शोभायमान ''सुमेरु–पर्वत'' की चूलिका (चोटी) से ''एक बाल'' के अंतर/फासले से शुरू होकर लोक के अंत तक के भाग को ''उर्ध्व–लोक'' कहा है ।

सो, भूमितल से 99,040 योजन ऊपर जाने पर उर्ध्व लोक शुरू होता है ।

उधर्व–लोक का आकार ढोलक जैसा है ।

इसके अनुसार ऊंचाई – 1,00,040 योजन कम 7 राजू है ।

मोटाई – 7 राजू और चौड़ाई – नीचे 1 राजू, बीच में 5 और ऊपर 1 राजू है ।

– उधर्व लोक में ''देवों'' के आवास हैं ।

अब उमास्वामी जी ने तत्वार्थसूत्र में (अध्याय 4 – सूत्र 17) वैमानिक देवों के 2 भेद बतलाये हैं :–

१ – कल्पोपपन्न (कल्पवासी)

२ – कल्पातीत

– जहाँ इंद्र आदि दस भेदों की कल्पना होती है, उन ''सोलह स्वर्गों'' में जन्म लेने वाले देवों को ''कल्पवासी देव'' कहते हैं।

– जहाँ इंद्र आदि दस भेदों की कल्पना नहीं होती, सोलह स्वर्गों से ऊपर उन 9 ग्रैवेयक, 9 अनुदिश, 5 अनुत्तर में जन्म लेने वालों को ''कल्पातीत देव'' कहते हैं । इन्हे ''अहमिन्द्र'' भी कहा है ।

– इसमें 12 देवलोक है । इसके चित्र निम्न प्रकार है।

असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, विद्युत कुमार, अग्निकुमार

सोलह–स्वर्ग

ऊपर आमने–सामने 8 युगल/जोड़े के रूप में 16 स्वर्ग, फिर 9 ग्रैवेयक, 9 अनुदिश और 5 अनुत्तर क्रम से आगे–आगे हैं ।

सौधर्म – ऐशान – सुमेरु–पर्वत के तल से डेढ़–राजू में

सानतकुमार–माहेन्द्र – सौधर्म – ऐशान के ऊपर डेढ़–राजू में
ब्रह्म–ब्रह्मोत्तर – सानतकुमार–माहेन्द्र के ऊपर आधे राजू में
लानत्व–कापिष्ठ – ब्रह्म–ब्रह्मोत्तर के ऊपर आधे राजू में
शुक्र–महाशुक्र – लानत्व–कापिष्ठ के ऊपर आधे राजू में
सतार–सहस्त्रार – शुक्र–महाशुक्र के ऊपर आधे राजू में
आनत–प्राणत – सतार–सहस्त्रार – के ऊपर आधे राजू में
आरण–अच्युत – आनत–प्राणत – के ऊपर आधे राजू में
इस प्रकार :

सौधर्म –ऐशान में 1 ½ (डेढ़) सानुत्कुमार – माहेन्द्र + 1 ½) (डेढ़) = 3 राजू
ब्रह्म–ब्रह्मोत्तर ½ + लानत्व–कापिष्ठ ½ + शुक्र–महाशुक्र ½ + सतार–सहस्त्रार ½ +
आरण–अच्युत ½ + आनत–प्राणत ½ = 3 राजू
3 + 3 = 6 राजू में 16 स्वर्ग हैं ।

उसके आगे लोक के अंत तक 1 राजू में 9 ग्रैवेयक, 9 अनुदिश और 5 अनुत्तर विमान और इसके ऊपर सिद्ध–शिला हैं।

इस तरह उर्ध्व–लोक की ऊंचाई ''1,00,040 योजन कम 7 राजू है'' ।

– अंतिम अनुत्तर विमान ''सर्वार्थ–सिद्धि'' के ध्वज–दंड से 12 योजन ऊपर जाकर :
1 राजू चौड़ी,
7 राजू लम्बी
और
8 योजन ऊँची,
आठवीं पृथ्वी है ।

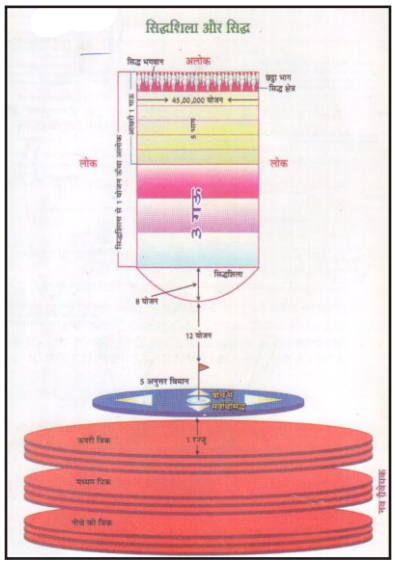

– इसके ठीक बीच में चांदी एवं सोने के समान तथा नाना रत्नों से परिपूर्ण, ''ईषत्प्रागभार'' नामक क्षेत्र है । यही ''सिद्ध–शिला'' है ।

– इसका आकार उल्टे रखे हुए कटोरे या छत्र के जैसा है । – विस्तार 45 लाख योजन है।

– सिद्ध–शिला की मोटाई बीच में 8 योजन की है जो दोनों सिरों तक घटते–घटते ''एक अंगुल'' मात्र की रह जाती है ।

ऊपर बताई आठवीं पृथ्वी के ऊपर तीनों वातवलय (घनोदधि वातवलय, घन वातवलय और तनु वातवलय) हैं, जिनकी कुल मोटाई कुछ कम 1 योजन या लगभग 7,575 धनुष की है।

इसमें से अंतिम तनु वातवलय के 525 धनुष प्रमाण क्षेत्र में ही ''सिद्ध–लोक'' हैं, इसी में अनन्तानत सिद्ध भगवान् विराजमान हैं ।

– एक–एक सिद्ध आत्मा के अंदर अनन्तों सिद्ध आत्माएं विराजमान हैं।

यही लोक का अंत है ।

इसी के साथ लोक विषय का भी अंत हुआ ।

लोक – जानने योग्य कुछ अन्य बातें कृ

– हमने पढ़ा था कि कर्म–भूमियों के आर्यखण्ड में ही तीर्थंकर होते हैं ।

विदेह–क्षेत्रों के 32 x 5 = 160 और बाकी 5 भरत, 5 ऐरावत जोड़ कर अढ़ाई–द्वीप में कुल 170 कर्म–भूमियाँ हैं ।

सो, एक समय में होने वाले तीर्थंकरों कि अधिकतम संख्या 170 है ।

– ऐसा कहा जाता है कि ''भगवान् श्री अजितनाथ जी'' के समय में 170 तीर्थंकर हुए थे।

– अधोलोक के खर और पंक भाग में भवनवासी और व्यंतर देवों के असंख्यात भवन हैं,
मध्य लोक में भी व्यंतर और ज्योतिष देवों के असंख्यात भवन हैं, प्रत्येक में एक–एक अकृत्रिम जिनालय है । इनकी संख्या असंख्यात है ।
लेकिन जिन अकृत्रिम चैत्यालयों कि गिनती कि जाती है उनकी संख्या 8,56,97,481 है। जिसमे से 458 मध्य–लोक में हैं ।

– पहला लवण–समुद्र, दूसरा कालोद इस क्रम में पांचवां समुद्र ''क्षीरसागर'' है । तीर्थंकरों के जन्माभिषेक के लिए देवगण इसी सागर से स्वच्छ जल लेकर आते हैं ।

– लोक के मध्य में 3,21,62,249 २/३ धनुष कम 13 राजू इस त्रस–नाली की ऊंचाई कही है । जिसके बाहर त्रस–जीव नहीं पाये जाते ।

– 14 राजू ऊँचे लोक में 7 राजू अधोलोक कहा, 7 राजू उर्ध्वलोक कहा है । मध्य–लोक को उर्ध्व लोक का ही निचला हिस्सा कहीं–कहीं माना गया है, क्यूंकि राजू कि तुलना में कुछ लाख योजन कुछ भी नहीं ।

– सिद्ध–शिला से 7,050 धनुष ऊपर तनुवातवलय के अंतिम 525 धनुष प्रमाण क्षेत्र में सिद्ध–लोक कहा है, जिसमें सिद्ध भगवान् विराजमान हैं ।

– अंत में लोक को पढ़ने के बाद यही भाव आना चाहिए कि अब तक अज्ञानवश मैं इस लोक के हर क्षेत्र मे (संसार–रूप क्षेत्र) अनन्तों बार जन्म ले कर मर चुका ...अब इस संसार चक्र से मुक्ति मिले उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए ।

– पढ़ने और जानने के लिए पूरा ज्ञान का सागर है ... करणानुयोग के प्रमुख शास्त्र तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, जम्बूद्वीपपण्णत्ति जैसे शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए ।

बाकी विषयों के लिए पढ़ते रहिये ''जैनसार, जैन धर्म का सार ... ''

जम्बूद्वीप, धातकी खण्ड, अर्द्धपुष्कर द्वीप, लवण समुद्र तथा कालेदधि समुद्र, परिमित मानव क्षेत्र माना जाता है। इस अढ़ाई द्वीप को मानव साधना क्षेत्र भी कहा गया है। जैन श्रमणों का विचरण भी ढाई द्वीप में ही होता है। इन मुनियों की जघन्य संख्या दो हजार करोड़ व उत्कृष्ठ नौ हजार करोड़ होती है।